Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 5, April-2019, ISSN 2230-7540

नासिरा शर्मा के उपन्यास 'बहिश्त' ज़हरा में नारी की देश के प्रति कर्तव्य-परायणता

Rajni Sharma[1]* Dr. Gyani Devi Gupta[2]

[1] Research Scholar

[2] Department of Hindi, University College of Basic Science and Humanity, Guru Kashi University, Talwandi Sabo, Bathinda

सार – *नासिरा शर्मा हिन्दी की प्रमुख लेखिका हैं। सृजनात्मक लेखन के साथ ही स्वतन्त्र पत्रकारिता में भी उन्होंने उल्लेखनीय कार्य किया है। वह ईरानी समाज और राजनीति के अतिरिक्त साहित्य कला व सांस्कृतिक विषयों की विशेषज्ञ हैं। वर्ष २०१६ का साहित्य अकादमी पुरस्कार उनके उपन्यास पारिजात के लिए दिया जायेगा।*

----------X----------

सात नदियाँ एक समंदर

यह नासिरा शर्मा का पहला उपन्यास है जो सन् 1984 को प्रकाशित हुआ। इस उपन्यास में ईरानी क्रान्ति को आधार बनाया गया है। इसमें लेखिका ने राजनीति का अर्थ बताते हुए कहा है। राजनीति सिर्फ "पावर गेंम है यही राजनीति है जो किसी की अच्छाई और बुराई को तय करती है सच्चाई के मुँह पर झण्डे गाड़ती है। ऐसी स्थिति में एक रचनाकार के आगे दो रास्ते होते हैं या तो इन राजनीतिज्ञो के आगे अपनी कलम बेच दे या इसे राजनीति के प्रहार से जख्मी जिंदगियों की पर्दाकुशाई में समर्पित कर दें। इस उपन्यास का पहला नाम बहिश्ते जहरा था। लेकिन बाद में 'सात नदियाँ एक समंदर के नाम से प्रकाशित हुआ। इस उपन्यास की प्रमुख पात्र सात सहेलियाँ है। सूसन मलिहा, परी महनाज, तय्यबा, सनोबर, अख्तर सारे उपन्यास की कथावस्तु इनके आस-पास ही घूमती है।

उपन्यास का आरम्भ विश्वविद्यालय के माहौल से होता है। जहाँ ये सातों सहेलियाँ फालगीरन से अपना भविष्य देखती हैं। विश्वविद्यालय के परिणाम आ जाने के बाद इनके पास आगे पढ़ाई करने के सारे रास्ते बंद हो जाते हैं क्यांकि ईरान में शाही सम्राज्य को हटाकर लोगों ने खुमैनी का शासन लाया। लोगों को यह भ्रम था कि उनकी जो दयनीय स्थिति अब है वह खुमैनी के शासन में नहीं होगी। उनका यह आश्वासन गल्त साबित हुआ और उनकी स्थिति पहले से भी अधिक बिगड़ गयी। लोग खुमैनी के विरुद्ध सघर्ष करने लगे। शहरों में हड़ताल, तोड़.फोड़, विश्वविद्यालयों का बंद होना आम बात हो गई थी। लोगों का सम्राज्य का अंत समीप है। अपना सारा पैसा वे विदेशों, बैकों में जमा करवा रहे थे और उनमें से कुछ लोग ये सोच कर रुके हुए थे कि शायद स्थिति सुधर जाए, देखते ही देखते ईरान से शाह के चित्र गायब हो गए और हर जगह खुमैनी के पोस्टर नज़र आने लगे। शाह ईरान से चला गया। सब लोग रंगीन टी.वी. पर खुमैनी को देखना चाहते थे और लो उन लोगों के घरों में घुस रहे थे जिनके घर रंगीन टी.वी. थे। जब खुमैनी ने की, कि बिजली और पैट्रौल सब ईरानियों के लिए मुफ़्त है तो पूरे ईरान में हाहाकार मच गया। लोग मीलों तक खुमैनी की कार को कंधों तक उठाकर उसके नाम के नारे लगाने लगे। "खुमैनी हमारे नेता खुमैनी हमारे रहबर" लेकिन एक विशेष वर्ग जो खुमैनी का आलोचक है उसे यह बात तर्कहीन प्रतीत होती है। दूसरी ओर परी, अख्तर, तय्यबा को अपनी पीएच.डी में दाखिले की आशा समाप्त हो जाती है। अब एनका मिलना भी कम हो जाता है। अब नया ईरान उभर रहा है। हर स्थान पर शाह के लोग हटाए जा रहे हैं। शाही खानदान के जेवर, कुत्ते, कपड़े निलाम हो रहें हैं। शाही फौज के अफ़सर एक के बाद एक सूली चढ़ाए जा रहे हैं। हर तरफ शाह और अमेरिका से घृणा बढ़ रही है। विश्वविद्यालय के आधे से अधिक निकाल दिए गए हैं। इस माहौल से तंग आकर परी की माँ ने तो उसका घर से बाहर निकलना बंद कर दिया है। महनाज़ के पिता की भी अचानक मृत्यु हो जाती है। उसके आशिक असलम का वह बहुत इंतजार करती है लेकिन कोई पत्र या

www.ignited.in

सूचना न मिलने पर उसका विवाह सुलेमान से हो जाता है। सुलेमान महनाज़ को लेकर जर्मनी चले जाता है। सूसन का विवाह अब्बास के साथ, मलिहा का हुसैन और सनोबर का जमिल के साथ हो जाता है। तय्यबा एक क्रान्तिकारी पार्टी में शामिल है तथा अख्तर मुहाहिदीने, खल्क पार्टी की सदस्या है। जिसने सत्ताधारी हिज्बउल्लाही पार्टी को चुनौती दे रखी है। तय्यबा खुमैनी के विरुद्ध अपनी कलम चलाती है और खतरा मोल लेती है। हँगामें बढ़ जाते हैं। सरकार बदलने से शाह का सम्राज्य बिखर जाता है और एक नई सरकार बन गई। इस लड़ाई में अख्तर काम आ जाती है। इससे सभी सहेलियों को बहुत दुख पहुँचता है। यह सब देख सूसन और मलिहा तय्यबा को समझाते हुए कहती हैं। "खुदरा काम के नशे में कहीं जान से हाथ न धो बैठना, यह सरकार ऐसे दर्शन समझ नहीं पाती है। जो तुम्हारा है।"2 मलिहा की जिंदगी भी बड़ी तकलीफ़देह दौर से गुजर रही हैं। एक तो उसे हुसैन का गम पहले ही है जिसकी कोई ख़बर नहीं दूसरा उस पर लगे इल्जाम से उसका गम और बढ़ जाता है। जहाँ पहले लोग उसे आदर की दृष्टि से देखते थे। वही आज आष्चर्य-भरी घृणा से देखते हैं। कभी-कभी तो वह आत्महत्या के बारे में सोचती है लेकिन अपने बच्चों का सोचकर कि अगर मेरे को भी कुछ हो गया तो मेरे बच्चों की देखरेख कौन करेगा वह यह कदम भी नहीं उठाती और जीवन उसकी मजबूरी बन जाता है। तय्यबा ने खुमैनी के विरोध में जो लिखना शुरू किया था। उसका अंजाम उसे पता ही था। एक बार आधी रात को तय्यबा का दरवाज़ा पाँच बन्दुकधारियों ने खटखटाया। फिर पूरे घर की तालाशी ली। तय्यबा के पूछने पर बताया गया कि उनको थाने से आर्डर मिला। उन्हें तालाशी में कुछ किताबे मिलती हैं और वे उसे कहते हैं। "चलिये आप इसी समय थाना।"3 और तय्यबा को जेल हो जाती है। अब तय्यबा के पास भागने का या अपने आप को बचाने का कोई रास्ता नहीं था। उसके पकड़े जाने की खबर 'चरीक.ए फिदाइन.ए .खल्कष् पार्टी के लोगों में फैलने से पार्टी के सदस्यों को बहुत दुख होता है। इस मुठभेड़ में उसके कई साथी गोलियों का शिकार हो जाते हैं मलिहा के पति हुसैन और सनोवर का पति जमिल भी शहीद हो जाता हैं। तय्यबा का इस बार जेल से वापिस आना कठिन है यदि बच गई तो इसे चमत्कार समझ कर धोखा नहीं खाना है बल्कि उसके द्वारा अन्य लोगों को पकड़ने के लिए छोड़ा जाएगा क्योंकि तय्यबा के द्वारा ही उसके अन्य साथियों तक पहुँचा जा सकता है। उसके पकड़े जाने के बाद तय्यबा के सब साथी अधमरे हो रहे हैं। पार्टी के सदस्यों को एक ख्याल बहुत परेषान कर रहा है कि कहीं यातनाओं के बीच नीम बेहोशी मे पूछे जा रहे प्रश्नों के उत्तर तय्यबा सही न दे बैठे क्योंकि ऐसा हो सकता है कातिम का उदाहरण उनके सामने है। मरने से पहले यातनाओं से चूर जिस बात को छुपाने के लिए वह मार खा रहा था दम निकलने के साथ वह बात मुँह से निकल गई थी ।

तय्यबा की आँखों पर पट्टी बाँध कर उसे दूसरी जगह पर ले जाया गया जहाँ वह देखती है कि चालीस पचास लोग जो सुबह से आए हैं कोई अपने बच्चों से मिलने, कोई अपने आदमी से वे सब बिलबिला रहे हैं कोई गुस्से से पागल सर पटक रहा है तो कोई सरकार को कोस रहा है औरतें थकान और बेचारगी से रोने लगी हुई हैं कुछ समझ नहीं आ रहा है इतने में पासदार 'शोर मत करो, पीछे हटो।"4 कहता हुआ दरवाजा बंद कर देता है। तय्यबा को जेल में डाल दिया जाता है और उससे अपने साथियो के नाम उगलवाने के लिए उसे तरह-तरह की यातनाएं दी जाती है। लेकिन तय्यबा टस से मस नहीं होतीं बल्कि उसका हौंसला और हिम्मत और बढ़ जाती है। उसे मारने के लिए पहले बिजली का केबल खूब हवा में घुमाया जाता है और फिर सड़ाक से उसके तलवों पर मारा जाता है। उसके हाथ-पैर प्लास्टिक की रस्सी से बाँध दिए जाते हैं। मार खाते-खाते वह बेहोश हो जाती है। तय्यबा के पैरों में पस पड़ जाती है। उसका उठना बैठना मुश्किल हो जाता है। "बाथरूम भी जाती तो घूटनों के बल चलती हुई हज़ार तकलीफों के बाद इस जरुरत से निपटती है। अभी तक न उसे कोई डॉक्टर देखने आया था न ही कोई दवा उसे दी गई थी।"5 तय्यबा का सारा बदन बुखार से टूट रहा था। फिर डॉक्टर को बुलाया जाता है। लेकिन तय्यबा को पूरी होश न थी। उसे सिर्फ यह अहसास है कि उसे स्टै[a]चर पर लादकर कहीं ले जाया जा रहा है। फिर वह बेहोश हो जाती है। ताहिर उसकी स्थिति देखकर कहता है। "इसके मरने से हमें फायदा नहीं नुकसान होगा।"6 इसके द्वारा ही हम इसके साथियों तक पहुँच सकते हैं। इसलिए इसके ईलाज में कोई कमीं नहीं रहनी चाहिए। कुछ दिनों बाद तय्यबा की तबीयत ठीक हो जाती है। उसे आँखों में पट्टी बाँध दूसरे कमरे में लाया जाता है। जहाँ उसे एक जानी-पहचानी आवाज सुनाई देती है जो उसके पुराने आशिक कुरुश की होती है। कुरुश भी आत्मविभोर हो जाता है। तय्यबा कहती है। ष्ष्मुझे तो अब भी यकीन नहीं आ रहा है कि पिछले दस सालों से तुम यहीं हो।"7 तय्यबा के सामने उसके साथियों को यातनाएं दी जाती हैं ताकि तय्यबा सारी हकीकत बयान करे। वह चिमगादड़ जैसी औरत उसे मारते-मारते थक जाती है और हाँफती हुई कहती है। "तुम इन दोनों 'नादिराए समीनाद्ध के खून की प्यासी बन रही होघ् कुछ बोलती क्यों नहीं। "आठ मास हो गये हैं गूँगी बने हुए..... हम सबको खून के आँसू रुला दिया है।..... वही सवाल सुबह वही सवाल शाम..... कब तक कोई दोहराए..... बहरी, गूँगी, अन्धी सब कुछ बनी हुई है। यह बदबख्त।"9 पासदार तय्यबा पर अपने सारे हथकंडे आजमाँ लेते हैं। लेकिन उसका मुँह खुलवाने में

www.ignited.in

असफल रहते हैं। फिर वे उसका बलात्कार करते हैं। तब तय्यबा " मेरी आत्मा को तुम दागदार नहीं कर पाए। यह शरीर तो पहले ही तुम लोगों की दी गई यातनाओं की सनद बना रहा है, नश्वर है, मगर आत्मा नहीं। आत्मा का स्पर्श तुम कर पाए, ऐसा केवल तुम भ्रम पाल सकते हो।"10 कहकर अपने फैसले पर अड़िग रहती है और अपने गुट से संबन्धित कोई बात नहीं बताती। अंत में उसे गोली मार दी जाती है और उसके मुख से आखिरी शब्द निकलते हैं "अलविदा! मेरे प्यारे वतन अलविदा।"11इस उपन्यास में पुरुषों से ज्यादा औरतें अधिक क्रियाषील रहीं। "दिलचस्प बात ये है कि वह औरत जो पिछली व्यवस्था में प्रताड़ित थी वो आागे बढ़ी फिर व्यवस्था बदली तो वह पहले से अधिक बुरी दशा को झेलने को बाध्य हुई। आज वह फिर मुक्ति आंदोलन में कूद पड़ी है अंजाम_ _ _ _ _?12 बदलाव आएगा ऐसा विश्वास है। इंसानियत की बेड़िया टूटेंगी, वह मुक्त होगी। इस उपन्यास का उद्देश्य ईरानी लोगों के दुखों, संवेदनाओं के माध्यम से मानवीयता का प्रसार करना है।

निष्कर्ष

बहिश्ते ज़हरा. राजनीति से संबंधित इस उपन्यास में राजनीतिक, जुलूस, नारे बाजीए दलबदलू प्रवृत्तिए भाई-भतीजावाद, हथकंडे, एक.दूसरे पर दोषारोपण, एक.दूसरे को नीचा दिखानाए लड़ाई-झगड़ा आदि बातों का चित्रण किया जाता है। समाज का हर व्यक्ति अपने हितों को प्राप्त करने के लिए अग्रसर हैं। किसी को किसी से कोई लेना-देना नहीं है। राजनीतिज्ञ अपनी सत्ता लोलुपता की पूर्ति हेतु लोगों की बलि देने से भी नहीं हिचकते और उन्हें आमजन के दुख-दर्द से कोई लेना-देना नहीं होता। राजनीति किसी भी देश के वर्तमान और भविष्य के निर्णायक तत्वों में से एक मानी जाती है। और इस उपन्यास के माध्यम से यह प्रगट किया है कि इस राजनीति का प्रभाव सबसे पहले सामान्यजन पर कैसे पड़ता है और इसका क्या परिणाम प्रकट होता है उनको दिखाना ही इनका मूल उद्देश्य था। इस राजनीति ने चारों तरफ युद्ध व वैमनस्य की भावना को निरंतर बढ़ाया है। आज राजनीति का अर्थ गुटबाजी और शडयंत्र बन गया है। आज की राजनीति शोषितों की पक्षधर होने की बजाय शोषकों की रक्षा कर रही है। सभी लोग इस दूषित राजनीति का शिकार होते जा रहे हैं। देश बरबादी की ओर जा रहा है। इस राजनीति के कारण सामान्य आदमी पिसता जा रहा है।

संदर्भ सूची:

1. नासिरा शर्मा, 'सात नदियाँ एक समंदर', पृष्ठ 52
2. नासिरा शर्मा, 'सात नदियाँ एक समंदर', पृष्ठ 65
3. नासिरा शर्मा, 'सात नदियाँ एक समंदर', पृष्ठ 68
4. नासिरा शर्मा, 'सात नदियाँ एक समंदर', पृष्ठ 159
5. नासिरा शर्मा, 'सात नदियाँ एक समंदर', पृष्ठ 231
6. नासिरा शर्मा, 'सात नदियाँ एक समंदर', पृष्ठ 235
7. नासिरा शर्मा, 'सात नदियाँ एक समंदर', पृष्ठ 251
8. नासिरा शर्मा, 'सात नदियाँ एक समंदर', पृष्ठ 274
9. नासिरा शर्मा, 'सात नदियाँ एक समंदर', पृष्ठ 251
10. नासिरा शर्मा, 'सात नदियाँ एक समंदर', पृष्ठ 264
11. नासिरा शर्मा, 'सात नदियाँ एक समंदर', पृष्ठ 292
12. नासिरा शर्मा, 'सात नदियाँ एक समंदर', पृष्ठ 7

Corresponding Author

Rajni Sharma*

Research Scholar

www.ignited.in